Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
April to June 2026, E-Journal, Vol. I, Issue LIV (54), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

इतिहास के पन्नों में स्थान खोजता छपोरा गढ़

डॉ. रामरतन साहू* ओंकार साहू**

* सह. प्राध्यापक (इतिहास) सी. व्ही. रमन विश्वविद्यालय, कोटा, बिलासपुर (छ.ग.) भारत
** अध्ययनकर्ता (इतिहास) बिलासपुर (छ.ग.) भारत

शोध सारांश– छत्तीसगढ़ का इतिहास केवल उसके बड़े नगरों, राजवंशो और प्रसिद्ध पुरातात्विक स्थलों तक सिमित नहीं है बल्कि गाँव तथा स्थानीय क्षेत्रों में शासन करने वाले छोटे–छोटे शासकों, राजवंशो से भी यहाँ की इतिहास व संस्कृति समृद्ध होती है। इस राज्य में ऐसे ही कई प्राचीन कालीन स्थानीय शासको व शासन क्षेत्रो का अध्ययन आज तक इतिहासकारों की दृष्टि से अछुता रहा है। यह शोधपत्र ऐसे ही एक शासन क्षेत्र छपोरा गढ़ तथा उसकी राजधानी छपोरा ग्राम में उपलब्ध प्राथमिक साक्ष्यों जैसे एक बड़े दुर्ग/गढ़ की उपस्थिति ग्राम का व्यस्थित बसाहट, जातिगत अध्ययन, जनमानस मे प्रचलित बातों तथा धार्मिक सांस्कृतिक मान्यताओं के आधार पर यहाँ की राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक व धार्मिक–सांस्कृतिक स्थिति का प्राथमिक अध्ययन है। यह शोधपत्र आने वाले समय में इस राज्य के इतिहासकारों को इस क्षेत्र के इतिहास से संबंधित विस्तृत अध्ययन तथा पुरातात्विक उत्खनन आदि द्वारा अन्य स्पष्ट अभिलेखीय साक्ष्यों को प्राप्त करने मे सहायक होगा।

प्रस्तावना – इतिहास प्राप्त साक्ष्यों के आधार पर तात्कालीन समय की राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक स्थिति का अध्ययन है। ये साक्ष्य साहित्यिक स्त्रोतों पुरातात्विक साक्ष्यों जिनमें प्राचीन सिक्को मुद्राओं तथा उत्खनन से प्राप्त स्थापत्यों व नगर नियोजनों आदि के रूप में देखा जाता है। मगर छत्तीसगढ़ में कई ऐसे प्राचीन गाँव हैं जिनकी ग्राम बसाहट व सांस्कृतिक मान्यताएँ उसके समृद्ध इतिहास को प्रतिबिंम्बित करते हैं लेकिन दुर्भाग्यवश कारणों से ऐसे गाँव इतिहास के पन्नों में स्थान पाने से वंचित हो जाते हैं। इन्ही समृद्ध ऐतिहासिक गाँवों में एक है मेरा गाँव छपोरा , जिसे छपोरा गढ़ कहा जाना अनुचित नही होगा। मेरे इस गांव छपोरा गढ़ मे वे सभी प्राथमिक साक्ष्य उपलब्ध है जो किसी भी इतिहासकार को अध्ययन करने आकर्षित कर सकता है फिर भी दुर्भाग्यवश इतिहासकारों के अध्ययन से आज तक वंचित रहा है।

इस शोध पत्र में हम इन्ही प्राथमिक साक्ष्यों के आधार पर तथा जनमानस से कुछ अन्य साक्ष्यों का संग्रहण करते हुए इस गाँव के समृद्ध इतिहास का अध्ययन कर इस पर प्रकाश डालने का प्रयास करेंगे।

परिचय– छपोरा गढ़ छत्तीसगढ़ राज्य के सक्ती जिले में स्थित कुछ बड़े ग्रामो मे से एक है। यह सक्ती जिला मुख्यालय से लगभग 30 किलोमीटर दूर दक्षिण दिशा मे SH– 16 दिपका से पदमपुर मार्ग (उड़ीसा सीमा तक) मे स्थित है। यह गाँव महानदी की सहायक बोरई नदी के तट में डुबान क्षेत्र से एक सुरक्षित स्थल मे बसा है। 2011 की जनगणना के अनुसार इसकी जनसंख्या 4000 के लगभग थी लेकिन वर्तमान मे यहाँ की जनसंख्या लगभग 5500 के आस पास हो गई है। यहाँ वर्तमान मे लगभग 12 जातियों के लोग निवासरत है।

(1) प्राथमिक उपलब्ध साक्ष्य : अध्ययन का आधार

(1.1) गढ़/किला के साक्ष्यों की उपलब्धता – गांव में गढ़ टिकरा के नाम से जाना जाने वाला दलहन फसलों की खेती के लिए प्रयुक्त उच्चभूमि जिसका क्षेत्रफल लगभग हेक्टेयर है। यह क्षेत्र चारो ओर से जल की खाई से घिरी थी जिसके साक्ष्य आज भी मौजूद हैं लेकिन अब इसके संकट का खतरा बना हुआ। इसी गढ़ मे कुछ अन्य साक्ष्य जो जन मानस से चर्चा करने पर प्राप्त हुई कि पहले इस क्षेत्र में स्थित ठाकुर देव के स्थल के आस पास पत्थर से निर्मित भवन के भग्नावशेष साक्ष्य उपलब्ध थे जो वर्तमान में समाप्त हो गए हैं। एक अन्य बात कि गाँव के खगेश्वर साहू पिता परसदास (गौंटिया जी) द्वारा इस क्षेत्र में आरा मशीन स्थापित करने के निर्माण कार्य के दौरान लगभग 2.5 मी. चौड़े नींव जिसमें बड़े–बड़े पत्थर प्राप्त होना बताया गया लेकिन इस क्षेत्र को पुरातत्व विभाग के नियंत्रणाधीन हो जाने के भय से इस बात को छुपा दिया गया।

(1.2) गाँव की बसाहट– बोराई नदी के डुबान क्षेत्र से दुर एक सुरक्षित क्षेत्र में इस गाँव को सुव्यवस्थित ढंग से बसाया गया था जहाँ लगभग 12 जाति के परिवारों को बसाया गया था। बस्ती में इन परिवार को इनकी सामाजिक राजनीतिक और सांस्कृतिक स्थिति के आधार पर बसाया गया था जो यहाँ की सामाजिक स्थिति के बारे में अध्ययन करने में सहायक होते हैं।

इस बस्ती में तेली, कलार, बैरागी, गोड़, संवरा, सुनार और एक राउत परिवार का एक साथ बसाहट मध्य बस्ती में था जिसके प्रमाण आज भी उपस्थित है। इस बस्ती से पूर्व दिशा में क्रमश: नाई, राउत, धोबी, गाड़ा आदि जाति की बस्ती के साक्ष्य आज भी उपलब्ध हैं जो मुख्य गढ़ के परिधि के समान्तर घुमी थी। इन बस्ती से कुछ दुर पूर्व दिशा में चर्मकारो की बस्ती थी जिन्हे आजकल सतनामी जाति के नाम से जाना जाता हैं।

(1.2.1) तालाब– गाँव में अनेक तालाब निर्मित थे जिनमें से एक घरेलु कार्य के लिए, एक घरेलु कार्य के लिए, एक धार्मिक व सांस्कृतिक आयोजनों

के लिए निर्मित था। वहीं दूर खेत के क्षेत्रों में सिंचाई के लिए कुछ तालाब जैसे:- डुमरहा, बनडबरी, लाली डबरी प्रमुख थे। इसके अलावा चर्मकारों का अलग तालाब था। दीवान और रानी (देवानीन) के स्नान के लिए अलग तालाब था जिसे आज क्रमश: देवान डबरी और रानी तालाब के नाम से जाना जाता है। रानी तालाब को राजा द्वारा क्वार्ट्जाइट के छोटे-छोटे पत्थरों से सजाया गया था यही कारण है कि इसे पत्थरी तालाब के नाम से भी जानते है।

(1.3) धार्मिक व सांस्कृतिक मान्यताएं- ग्राम देवी के रूप में माँ घाट गोसाईन दाई का विशेष महत्व इसके अलावा गाँव में प्राचीन काल से ही ठाकुरदेव, सांकर देवता, पाट देवता, सात बहिनिया आदि देवी देवताओं की पूजा होती आ रही है। खेतों व फसलो की रक्षा के लिए मुड़कट्टी व छातर देव की पूजा करने की मान्यता आज भी प्रचलित है। इन सब के अलावा तालाब तट मे एक प्राचीन शिव मंदिर भी मौजूद है।

(1.3.1) दीवान साहब से संबंधित सांस्कृतिक मान्यताएं - गाँवो में आज भी विभिन्न धार्मिक, सांस्कृतिक आयोजनों मे दीवान साहब की पूजा की जाती है। जिनकी स्मृति गाँव के देवान डबरी के तट में आज भी स्थित है।

(1.3.2) राउत-राउताइन और बैगा की पूजा- गाँव मे आज भी राउत-राउताइन, जुर्रहा बैगा तथा परउ बैगा की पूजा यहाँ से सामाजिक तथा सांस्कृतिक स्थिति का प्रतिनिधित्व करते है।

(1.4) जातिगत अध्ययन- इस गाँव मे तेली, कलार, चन्द्रनाहू, धोबी, सुनार, बैरागी, राउत, नाई, गांड़ा, गोंड, संवरा तथा सतनामी जिन्हे पूर्व में चर्मकार जाति के नाम से जाना जाता था यहाँ बसे हैं। इन जातियों का अध्ययन करने पर निम्न बातें स्पष्ट होती है -

(1.4.1) तेली जाति का अध्ययन- तेली जाति का अध्ययन करने पर प्राप्त होता है कि तेली जाति में कुछ विशेष गोत्र समुह के लोग यहाँ है जिनमे चौधरी गोत्र के लोग बीच बस्ती के मध्य में एक ऊँचे भूभाग में निवास करते थें जिनके परिवार को आज भी तेली गौंटियाँ के नाम से जाना जाता है।

एक अन्य गोत्र राउतराय जिन्हे आज भी गौंटिया परिवार के नाम से जाता है, इस गोत्र के लोगों के बारे मे अध्ययन करने पर पता चला कि इस गोत्र के लोग कुख्यत: नरसिंह नाथ (उड़ीसा) के आस-पास के क्षेत्र मे बहुतायत पाए जाते है वही छ.ग. मे सारंगढ़ बिलाईगढ़ जिले के कुछ ही चुनिंदा गांव में कुछ परिवार बसे हुए हैं।

इसी अध्ययन से पता चलता है कि छपोरा गढ़ का संबंध कल्चुरी शासन के प्रथम चरण से भी रहा होगा जहाँ पृथ्वीदेव-द्वितीय का सामंत ब्रह्मदेव के साथ मिलकर कलिंग राज्य पर आक्रमण किया और जटेश्वर नामक शासक को पराजित किया था। इसी आक्रमण के दौरान छपोरा गढ़ के दीवान भी सहयोगी रहे होंगे और उस क्षेत्र से राउतराय गोत्र के तेली यहाँ लाए गए होंगे। एक संभावना यह भी बनती है कि यह क्षेत्र सोमवंशीय शासकों से भी संबंधित रहा हो जिसके परिणाम स्वरूप राउतराय गोत्र के तेली यहाँ आए होंगे। इन्हे छपोरा में स्थान तेली गौटिया के घर के पूर्व दिशा में स्थित खाली जगह पर प्रदान किया गया होगा। दो अन्य गोत्र के तेली का भी निवास पुरानी बस्ती में मिलता हैं जिनसे ऊपर में वर्णित परिवारों के साथ वैवाहिक संबंध था।

(1.4.2) कलार जाति का अध्ययन- कलार जाति का अध्ययन करने से यह बात स्पष्ट रूप से पता चला कि यहाँ कलार जाति के 3 परिवार थे जिनमें 2 परिवारो का प्राचीन कालीन निवास स्थान पुरानी बस्ती में प्राप्त हुए हैं तथा इन तीनों ही परिवार का गोत्र 'पीपल' है तथा इनका संबंध एक समीपस्थ ग्राम 'पिरदा' से जुड़ता है।

इन तथ्यो के आधार पर कई निष्कर्ष तक पहुँचा जा सकता है। छपोरा गढ़ के अंतर्गत पिरदा तथा उसके आस-पास के गाँव भी नियंत्रण में थे। दीवान द्वारा जब यह गढ़ ग्राम बसाया गया तब कलार जाति के 2 परिवार पिरदा गांव से यहाँ लाकर बसाए गए थे तथा तीसरा परिवार बाद में यहाँ बसने आया था।

(1.4.3) चन्द्रनाहु जाति का अध्ययन- चन्द्रनाहु जाति का अध्ययन करने पर प्राप्त हुआ कि गाँव मे चन्दनाहु जाति के 4 अलग-अलग गोत्र के परिवार निवास करते हैं। कश्यप गोत्र का प्राचीन निवास पुरानी बस्ती (बीच बस्ती) के पूर्व में प्राप्त हुआ। इसके अलावा 'गोरहा' और 'पाण्डेल' गोत्र का निवास पुरानी बस्ती के पश्चिम दिशा में मिलता है। एक अन्य गोत्र 'त्रिकान' का निवास मुख्य तालाब के किनारे मे प्राप्त होता है। जनमानस से चर्चा करने पर प्राप्त हुआ कि त्रिकान गोत्र के परिवार को किसी राजा के काल में कुछ वर्षो के लिए गौंटिया का पद प्रदान किया गया था।

(1.4.4) सतनामी जाति का अध्ययन- प्राचीन गढ़ छपोरा की बस्ती में सतनामी जाति जिन्हें प्राचीन काल में चर्मकार जाति के नाम से जाना जाता था का अध्ययन करने पर प्राप्त हुआ कि यहाँ इनके 4 प्रमुख गोत्रों के परिवारों का प्राचीन काल से संबंध प्राप्त होता है जिनमे खुँटे, कुर्रे, राय और बघेल प्रमुख थे इसके अलावा अन्य गोत्र के परिवार वैवाहिक संबंधों के बाद यहाँ बसे थे। इनकी एक पृथक बस्ती पुरानी बीच बस्ती के पूर्व में 'मंडल डबरी' के आस-पास प्राप्त होती है, जहाँ चर्मकार का कार्य किया जाता था।

(1.4.5) अन्य जातियों का अध्ययन- अन्य जातियों का अध्ययन करने पर प्राप्त हुआ कि इनके एक बैरागी या बावा जाति, नाई, धोबी, राउत, गाड़ा, सुनार, गोंड़ व संवरा जाति के एक-एक परिवारों का घर प्राप्त हुआ। हालांकि वर्तमान में वैवाहिक संबंधों के बाद इनके अनेक परिवार हो गए हैं।

(1.5) अन्य समीपस्थ गाँवों से संबंध- प्राचीन गढ़ ग्राम छपोरा के समीपस्थ गाँवों से संबंधों का अध्ययन करने पर डोमा, अचरीतपाली माहुलदीप, बासीन, बरपाली, देवगाँव घोघरी आदि प्रमुख है जहाँ से निम्न आवश्यकताएँ पूर्ति होती थी। घोघरी के लोहार जाति से औजार आदि की आपूर्ति डोमा तथा बरपाली के महंत (जुलाहा) परिवारों से बुने हुए कपड़ों की आपूर्ति होती थी, अचरीतपाली के गांड़ा जाति रक्षा कार्य मे सहयोग करते थे, बासीन व देवगाँव के कुंभकार यहाँ मिट्टी के बर्तन आदि पहुँचाते थे। इसके अलावा देवगाँव, रनपोटा, मिरौनी, नरियरा, मुड़पार आदि कुछ गाँवों से फल, फूल और सब्जी की आपूर्ति होती थी जिनका महत्व वर्तमान समय तक बना हुआ है।

इस गढ़ के अंतर्गत इन गाँवों के अलावा, नावापारा, कुरदा, कुरदी, पिरदा तथा उसके आस-पास के सभी गाँव अमलीडीह तथा बोराई नदी और महानदी दोआब के गाँवों सें लगान की वसुली की जाती थी।

(2) साक्ष्यों के आधार पर छपोरा गढ़ का ऐतिहासिक अध्ययन -अब तक के प्राप्त प्राथमिक साक्ष्यों के आधार पर छपोरा गढ़ के प्राचीन राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक व धार्मिक-सांस्कृतिक स्थिति का अध्ययन करते हैं। प्रथम दृष्टया यह स्पष्ट होता है कि छपोरा इस क्षेत्र के शासकों की राजधानी थी तथा इसे सुनियोजित तथा व्यवस्थित ढंग से बसाया गया था।

(2.1) राजनीतिक स्थिति- प्राचीन काल में इस क्षेत्र के लगभग 30-35 गांवों को किसी स्थानीय राजवंशों द्वारा शासन किया गया। इसी राजवंश

के किसी एक शासक द्वारा छपोरा को जो कि सभी दृष्टिकोण से सुरक्षित थी गाँव बसाकर राजधानी बनाया गया। इस राजधानी गाँव छपोरा को दैनिक गतिविधियों के लिए आवश्यक जातियों के परिवारों को लाकर बसाया गया था। इस गाँव की सुव्यवस्थित प्राचीन बस्ती तथा एक बड़े क्षेत्रफल में सुरक्षित किला/गढ़ का साक्ष्य इस बात को प्रमाणित करता है। संभवत: यहाँ गोड़ शासकों का शासन रहा हो।

प्रारंभ मे यह राज्य स्वतंत्र शासन करता रहा लेकिन मल्हार के उत्कर्ष के समय उनके क्षेत्र विस्तार अभियान के बाद यह क्षेत्र उसके अधीन हो गया होगा तथा यहाँ के राजा को 84 गाँवों के एक गढ़ का प्रमुख बना कर दीवान कहा गया होगा।

इस क्षेत्र से अब तक किसी अभिलेखीय या अन्य पुरातात्विक साक्ष्य जैसे सिक्के, मुद्रा आदि प्राप्त न होना 2 संभावनाए लाता है - प्रथम यह राजवंश तथा राज्य क्षेत्र अब तक इतिहासकारों की दृष्टि से बचा रहा हो जिससे कोई उत्खनन कार्य नही हुआ। दुसरा इस राजवंश के राजा के कुशल प्रशासन तथा राजा का जनता के प्रति और जनता का राजा के प्रति स्नेह से प्रभावित होकर कुछ शर्तो जैसे मुद्रा या सिक्के जारी न करना आदि के साथ शासन करने की अनुमति प्रदान की गई हो।

कल्चुरी काल में यह कल्चुरियों के नियंत्रण में था या सोमवंश के अथवा एक स्वतंत्र शासन क्षेत्र था यह किसी ठोस साक्ष्य के अभाव में स्पष्ट करना उचित नही होगा। लेकिन राउत राय गोत्र के तेली परिवार का उड़ीसा के नरसिंह नाथ क्षेत्र से यहाँ आकर बसना इस बात को रेखांकित करता है कि इसका संबंध किसी न किसी प्रकार से अन्य क्षेत्रों व राजवंशों से रहा होगा।

(2.1.1) पतन- संभवत: इस साम्राज्य का पतन राजा/ दीवान के नि:सन्तान मृत्यु हो जाने के कारण हुआ होगा। चुँकी दीवान राजा का जनता के प्रति प्रेम समर्पण तथा नि:स्वार्थ भाव से क्षेत्र की जनता की सेवा करना। यही कारण था कि उनकी जनता ने उनके स्नेह तथा सेवा भाव के कारण आज भी उन्हें गाँव के हर धार्मिक तथा सांस्कृतिक आयोजनों में देव रूप में पूजते हैं।

(2.1.2) पतन के बाद- दीवान राजा के नि:संतान मृत्यु हो जाने के पश्चात यह क्षेत्र उत्तराधिकार विहीन हो गया तथा इस क्षेत्र में अराजकता फैल गई होगी। इस अराजकता को दूर करने में इस गाँव के तात्कालीन प्रमुख चौधरी गोत्र के तेली गौटियाँ परिवार के प्रमुख असफल हुए होंगे जिसके बाद कल्चुरी शासकों ने गौंटिया का पद त्रिकान गोत्र के चन्द्रा परिवार को सौंपा होगा क्योंकि उन्होंने राजा व उनके मंत्री सहित अन्य सहयोगियों की सेवा की थी ऐसी किवदंती गाँव के एक वर्ग मे प्रचलित है। यह गौंटिया भी प्रशासन को सुचारू रुप से चलाने में असमर्थ रहा।

ऐसे समय में राउत राय गोत्र के प्रमुख तथा प्रभुत्वशाली व्यक्ति को गौंटिया बनाया गया जिसने क्षेत्र मे शांति व्यवस्था लाने में सफलता प्राप्त की तथा पुन: इस गाँव व क्षेत्र मे समृद्धि व खुशहाली कायम हो सकी। इस परिवार के मिसल व वंश वृक्ष का भागीरथी के नाम से शुरू होने के रूप में आज भी मिलता है।

(2.2) आर्थिक स्थिति- छपोरा गढ़ कृषि प्रधान गढ़ था। जहाँ लगान वसुली का कार्य दीवान के अधीन सहायक अधिकारियो द्वारा किया जाता था। गढ़ ग्राम छपोरा की बात करें तो यह बाढ़, सुखा आदि से सुरक्षित गांव था जो बोराई नदी के समीप डुबान क्षेत्र से दूर बसाया गया था। सिंचाई सुविधा के लिए कृषि भूमि क्षेत्रों में 3 तालाब बनवाए गए थे इसके अलावा बहरा भूमि तथा मुड़ा भूमि में भी कम मात्रा में पानी रोकने की व्यवस्था थी। इस गाँव के उत्तर की सम्पूर्ण भूमि उपजाऊ मानी जाती थी जहाँ मटासी भूमि में धान की पैदावार अधिक थी तो वहीं कन्हार मिट्टी में रबी फसलों मे गेहूँ आदि उपजाया जाता था। मुख्य तालाब के चारो ओर गन्ने की खेती कर गुड़ प्राप्त किया जाता था। तलवा टिकरा तथा अन्य टिकरा भूमि में उड़द तथा अन्य सब्जियों सहित तिल व अन्य दलहन व तिलहन फसल उपजाए जाते थे।

पशुपालन में गाय व भैंस प्रमुख रूप से पाले जाते थे जिन्हे चराने तथा दुध निकालने आदि कार्य के लिए राउत जाति के लोगों का बसया गया था।

यह गाँव आस पास के व्यवसायी व शिल्पी वर्ग के लागों के लिए प्रमुख बाजार का केन्द्र था। डोमा, बरपाली आदि ग्राम के महंत जाति के लोगों द्वारा वस्त्रों की बुनाई आदि का व्यवसाय तथा घोघरी के लोहार जाति के परिवारों द्वारा औजार निर्माण का कार्य और देवगाँव के कुम्हार जाति द्वारा मिट्टी के बर्तन यहाँ विक्रय किए जाते थे।

(2.3) सामाजिक स्थिति- इस गढ़ ग्राम छपोरा को दैनिक गतिविधियों में सहायक लगभग सभी जातियों के साथ बसाया गया था। यहाँ वर्ण व्यवस्था जाति व्यवस्था तथा जातिगत अस्पृश्यता मौजूद थी जिसे प्राचीन कालीन बस्तियों के बसाहट के आधार पर स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

यहाँ सभी जाति के लोग उनके जातिगत व्यवसाय में संलग्न थे जैसे तेली जाति के लोग तेल निकालने कलार जाति के लोग शराब निकालने तो वैरागी (वैष्णव) जाति के लोग धार्मिक अनुष्ठान व पूजन का कार्य करते थे। इसके अलावा राउत, नाई, धोबी तथा चर्मकार जाति के लोग भी जातिगत व्यवसाय करते थें। बीच बस्ती में बसे सिदार जो गोड़ व संवरा जाति के थे संभवत: राजा व दीवान के सैन्य व अन्य कार्यो में सहयोग करते रहे होंगे।

पुरानी बस्ती के बीच मे बसे सिदार, तेली, कलार, सुनार, बैरागी, चन्द्रनाहु जाति के मध्य जातिगत भेदभाव नही था तथा ये आपस मे सहयोग के भाव से एक दुसरे के साथ जुड़े हुए थे। राउत व नाई जाति के लोग भी सामाजिक व सांस्कृतिक कार्यो में सहयोग करते थे।

बीच बस्ती से थोड़ी दूर में बसे धोबी व गाड़ा जाति के परिवारों की बस्ती इस बात को स्पष्ट करती है कि इन वर्गो के साथ भेदभाव होता था। चर्मकारों की बस्ती इनसे भी दूर पूर्व दिशा में बसी है जो स्पष्ट करती है कि इस जाति से गाँव के अन्य सभी जातियाँ भेदभाव करती थी। हालाँकि जनसंख्या वृद्धि होने के साथ-साथ बस्ती का विस्तार होने के कारण जातिगत भेदभाव धीरे-धीरे कम हुआ लेकिन पूर्णत: समाप्त न हो सका।

एक बात और जो जातिगत अध्ययन से स्पष्ट होता है यहाँ प्रशासनिक क्षमता तथा योग्यता के आधार पर विभिन्न जाति के लोगों को प्रशासनिक कार्यों में राजा अथवा दीवान द्वारा शामिल कराया जाता था। इसके साथ ही ये सभी कृषि कार्य भी करते थे जो इनके आय वृद्धि तथा समृद्धि का आधार बनी।

(2.4) धार्मिक व सांस्कृतिक स्थिति- प्राचीन काल में यहाँ गोड़ राजाओं का शासन था अत: देवी माता के पूजन का महत्व विशेष रूप से होता था। ग्राम के दो मुख्य तालाब के मध्य में विराजित इस राजवंश की प्रमुख देवी माँ घाटगोसाईन दाई का पूजन आज भी होता है। इस देवी की महिमा व मान्यता आज भी आस-पास के सभी गाँवों मे है। इसके अलावा ग्राम देवता के रूप में ठाकुर देव, सांकरा देव, पाट देवता, मुड़कटी देवता तथा छातर देवता आदि के पूजा की परम्परा प्राचीन काल से लेकर आज तक चल रही है।

इसके अलावा दीवान राजा की पूजा दीवान साहब के रूप में आज भी दीवान डबरी के किनारे स्मृति स्तंभों की पूजा की जाती है। इसके किनारे पर ही रानी की पूजा सात बहिनिया माता के रूप में की जाती है।

गाँव के अन्य प्रतिष्टित व्यक्ति जिन्होंने गाँव की उन्नति समृद्धि व सेवा में अपना संपूर्ण जीवन लगाया ऐसे लोगो की भी पूजा आज भी सभी सांस्कृतिक व धार्मिक आयोजनो में की जाती है। इनमें परउ बैगा, जुरहा बैगा और राउत-राउताइन प्रमुख है।

(3) अध्ययन का महत्व एवं चुनौतियाँ- यह शोधपत्र प्राथमिक रूप से उपलब्ध साक्ष्यों के आधार पर किया गया अध्ययन है। अगर इस शोधपत्र पर ध्यान देते हुए राज्य के पुरातत्व विभाग एवं अन्य इतिहासकार इस गाँव व क्षेत्र पर आगे अध्ययन और उत्खनन करेंगे तो नि:संदेह यहाँ के इतिहास के संबंध में और अधिक स्पष्ट साक्ष्य प्राप्त हो सकेगा।

इस विषय पर अध्ययन से संबंधित कुछ चुनौतियो में ऐतिहासिक धरोहरो का क्षय होना तथा तालाब आदि को राजनैतिक व आर्थिक लाभ के लिए समतल करना प्रमुख है। अन्य चुनौतियो में गाँव के नागरिको में जागरूकता का आभाव तथा गढ़ भुमि के अपने जमीन को पुरातत्व विभाग के अधीन हो जाने से स्वामित्व खोने की आशंका प्रमुख चुनौतियाँ है।

निष्कर्ष- प्राथमिक उपलब्ध साक्ष्यों के आधार पर अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि इस क्षेत्र मे प्राचीन काल मे किसी स्थानीय राजवंशो का शासन रहा होगा जो संभवत: राजगोड़ वंश से संबंधित रहे हो। इस वंश की राजधानी छपोरा गढ़ थी जिसे इस वंश के शासकों द्वारा सभी तरह से सुरक्षित स्थान में दैनिक गतिविधियों में सहायक जातियों के कुछ परिवारों के साथ बसाया गया था।

यह क्षेत्र आर्थिक रूप से समृद्ध तथा शांति प्रिय क्षेत्र था जहाँ कृषि कार्य राजस्व का प्रमुख स्त्रोत था। इसके साथ यहाँ स्थानीय व्यापार तथा वाणिज्य का भी चलन था। गढ़ ग्राम छपोरा मे सिंचाई सुविधा के लिए तालाब आदि खुदवाए गए थे।

सामाजिक व्यवस्था मे जातिगत भेदभाव तथा वर्ण व्यवस्था मौजूद थी लेकिन योग्यताओं के आधार पर इन्हें प्रशासन के कार्यो में शामिल किया जाता था। विभिन्न सामाज के प्रतिष्ठित व्यक्ति जो गाँव व क्षेत्र के विकास में सहयोग किए उन्हें आज भी देव रूपों मे पूजा जाता है।

गोड़ राजवंशो मे देवी पूजा का विशेष महत्व होता है तथा इस क्षेत्र में माँ घाट गोसाईन दाई की पूजा प्राचीन काल से लेकर आज तक की जाती है इसके अलावा ठाकुर देव, सांकर देव, पाट देवता आदि की भी पूजा की जाती है।

इस क्षेत्र के राजा मल्हार के उत्कर्ष के काल मे गढ़ प्रमुख के रूप में 'दीवान' के रूप मे जाने गए। यहाँ के अंतिम दीवान जो एक न्यायप्रिय तथा जन-हितैषी शासक थे, नि:सन्तान मृत्यु को प्राप्त हुए और यहाँ दीवान राजा का शासन समाप्त हुआ लेकिन उन्हें आज भी यहाँ श्रद्धापूर्वक पूजा जाता है।

मौखिक साक्ष्य:

1. कपूर बाई साहू
2. रामाधार साहू
3. सागर लाल साहू
4. हितेश चन्द्रा
5. सुरेश डनसेना
6. सुखीराम कुर्रे

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. छत्तीसगढ़ का इतिहास - डॉ. रामकुमार बेहार
2. मल्हार - के. जी. बाजपेयी और एस. के. पाण्डेय
3. समग्र छत्तीसगढ़ - छत्तीसगढ़ राज्य हिन्दी ग्रंथ अकादमी

****